डिजिटल केबल का बढ़ा भारत में मकड़जाल

भोपाल: भारत अब एशिया का प्रमुख केबल बाजार बनने की दहलीज पर है। 1992 में जब से सरकार ने निजी केबल उद्योग कंपनियों के लिए दरवाजे खोले थे, तब से केबल सेवा उद्योग को भारत में एक लम्बा वक्त गुजर चुका है। भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछले दशक में तेजी से विकास करने के साथ भारतीय केबल सेवा उद्योग भी एक तेज गति की आकर्षक संभावनाओं वाले क्षेत्र के रूप में उभरा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा डिजिटल केबल टीवी होम मार्केट बनने की ओर तेजी से बढ़ रहा है। केबल उद्योग की कामयाबी की कहानी में सबसे प्रमुख योगदान उस उत्सुकता का है जो नयी तकनीकियों को अपनाने में निजी केबल कंपनियां दिखाती हैं। 90 के दशक के शुरुआती दौर में, उदारवाद का दौर शुरू होने के साथ ही केबल कंपनियों ने नयी नयी तकनीकियों को अपनाया, ताकि टेलीविजन देखने के शौकीन भारतीय परिवारों की बढ़ती मांगों को पूरा किया जा सके। हमने देखा है कि इस दौरान चैनलों की तादाद में भारी इजाफा हुआ है। सामान्य एनालॉग सिग्नल केवल 99 चैनलों को ही दिखा सकते थे। केबल प्लेटफार्म का डिजिटलीकरण ही इसका सही समाधान था, जिसे अपनाने में केबल कंपनियों ने काफी रुचि दिखलाई। सर्वश्रेष्ठ ऑडियो विडियो खासियतों के साथ डिजिटल केबल के जरिये 999 तक चैनल दिखाये जा सकते हैं, जो अपने आप में किसी भी टेलीविजन दर्शक के लिए बेहद रोमांचकारी बात है।

वर्षों के विलम्ब और गतिरोधों के बाद, अब डिजिटल केबल ने भारतीय महाद्वीप में अपनी सशक्त मौजूदगी दर्ज कराई है।

एट्रिया कन्वर्जेंस टेक्नोलॉजीज सीईओ बाला मलाडी के अनुसार डिजिटल केबल अब निरंतर अपनी जड़ों को मजबूत करता जा रहा है और यह भारतीय घरों का एक आवश्यक अंग के रूप में अपनी स्थिति कायम कर रहा है। घरेलू टेलीविजन बाजार, डिजिटल प्लेटफार्म की ओर मुड़ गया है। डीटीएच सेवाओं के मुकाबले डिजिटल केबल अधिक गुणवत्ता वाले चित्रों और आवाज को प्रस्तुत करता है तथा मूल्यवर्धित सेवाओं को भी। दो तरफा संचार जैसे कि भुगतान के अनुसार प्रोग्रामिंग, विडियो ऑन डिमांड आदि भी डिजिटल केबल के जरिए संभव है। डीटीएच मे चैनलों की तादाद बहुत थोड़ी होती है। इसकी तुलना में डिजिटल केबल 1000 तक चैनल दिखा सकता है। वर्तमान में, ज्यादातर डीटीएच कंपनियां लगभग 200 चैनलों की पेशकश करती हैं। उन्होंने कहा कि नीति निर्माताओं द्वारा पारित किए गए नये नियमों के कारण नये ऑपरेटरों का प्रवेश आसान हो गया है। केबल नेटवर्कों का डिजिटलीकरण किए जाने, विदेशी पूंजी और निजी पूंजी का निवेश बढ़ने की राह बन गयी है। साथ ही पेशेवर केबल टीवी कंपनियों की तादाद में भी बढ़ोत्तरी होगी।